

वाराणसी के हथकरघा बुनकरों में डिजिटल आधुनिकता : एक समाजास्त्रीय अध्ययन

प्रो० (डा०) रितु घोष¹ ए अंकिता दीप²

¹विभागाध्यक्ष, समाजास्त्र विभाग ए ²भोद्य छात्रा

¹श्री जे०एन०पी०जी० कालेज, चारबाग, लखनऊ

²समाजास्त्र विभाग ए लखनऊ वि विद्यालय, लखनऊ

सार

भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना में हस्तकला एवं हथकरघा उद्योग का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह उद्योग न केवल आर्थिक आजीविका का स्रोत है, बल्कि यह सामाजिक पहचान, पारिवारिक ज्ञान और सांस्कृतिक निरंतरता का भी प्रमुख आधार है। वर्तमान समय में डिजिटल आधुनिकता के विस्तार ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। एक ओर डिजिटल प्लेटफॉर्म नए बाजार अवसर प्रदान कर रहा है, तो दूसरी ओर पारंपरिक ज्ञान, कौशल और सांस्कृतिक मूल्यों पर दबाव भी उत्पन्न हो रहा है। यह अध्ययन हथकरघा बुनकरों पर डिजिटल आधुनिकता के प्रभाव को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझने का एक प्रयास है। अध्ययन में द्वितीय स्रोतों जैसे सरकारी दस्तावेज शोध लेख, थीसिस रिपोर्ट और समाचार पत्र पत्रिकाओं का उपयोग करते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार डिजिटल परिवर्तन बुनकरों के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित कर रहा है तथा वह इन परिवर्तनों के साथ किस प्रकार सामंजस्य स्थापित कर रहे हैं। विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल आधुनिकता के संदर्भ में बुनकर समुदाय की स्थिति संक्रमणशील तथा पिछड़ी हुई प्रतीत होती है और अब भी बुनकर समुदाय आर्थिक संकट, सामाजिक असुरक्षा और डिजिटल पिछड़ेपन के त्रिकोण में फंसा हुआ है। इस सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखने के लिए केवल डिजिटल अधिसंरचना की नहीं बल्कि सरकारी नीतिगत हस्तक्षेप, सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था और बुनकर केंद्रित नैतिक ढांचा भी आवश्यक है। इसीलिए हथकरघा बुनकरों और इस कला के समावेशी विकास के लिए जागरूकता कार्यक्रम और डिजिटल प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जो उन्हें उनके अधिकारों से अवगत करा सके और समाज की वास्तविक जरूरत के आधार पर इनका विकास सुनिश्चित कर सके।

Keywords- डिजिटल आधुनिकता, हथकरघा बुनकर, समावेशी विकास, डिजिटल प्रशिक्षण, सांस्कृतिक निरंतरता।

परिचय

भारतीय हथकरघा उद्योग देश का सबसे बड़ा कुटीर उद्योग है और ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के बाद रोजगार प्रदान करने वाला दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है। 41वां ऑल इंडिया हैंडलूम सेंसस 2019-20 के अनुसार भारत में लगभग 35.22 लाख बुनकर कार्यरत हैं, जिनमें से 2 लाख के करीब बुनकर उत्तर प्रदेश में पाए जाते हैं, और इनका 20 से 25 प्रतिशत बुनकर वाराणसी में कार्यरत है। इनमें ज्यादातर संख्या महिला बुनकरों की है लगभग 72.29 प्रतिशत। भारत वैश्विक स्तर पर हथकरघा से बने हुए कपड़ों का लगभग 95 प्रतिशत उत्पादन करता है, जो की 20 से अधिक देशों को निर्यात किया जाता है। इसलिए हथकरघा उद्योग भारत की संस्कृति का एक अभिन्न अंग है जो हमारे देश की समृद्धि और विविधता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय में हथकरघा उद्योग अनेक कठिनाइयों से गुजर रहा है जिसके कारण इसका अस्तित्व खतरे में है। देश के सांस्कृतिक धरोहर को बचाए रखने के लिए आवश्यक है कि सरकार इस उद्योग के विकास पर ध्यान दे। यद्यपि वाराणसी के हथकरघा उद्योग पर अनेक अध्ययन हुए हैं, परन्तु अधिकांश अध्ययन आर्थिक पक्ष तक सीमित है, कई अध्ययनों में केवल यह बताया गया है कि बुनकरों के पास स्मार्ट फोन है, लेकिन इसकी पुष्टि नहीं हुई है कि वह इस तकनीक का उपयोग कैसे, कितनी बार और किस उद्देश्य से करते हैं। पायलट अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद उनका प्रभावी और उत्पादक उपयोग सीमित है। बजरडीहा जैसे विशिष्ट बुनकर क्षेत्र पर डिजिटल आधुनिकता के प्रभाव का गहन अध्ययन बहुत कम हुआ है। बजरडीहा को शोध क्षेत्र के रूप में चुनने का प्रमुख कारण है कि वाराणसी में जितने भी बुनकर क्लस्टर मौजूद हैं, उनमें से इस क्षेत्र में सबसे अधिक मात्रा में बुनकर मौजूद हैं, जिन पर अभी विशिष्ट क्षेत्र केन्द्रित अध्ययन नहीं किया गया है। वर्तमान साहित्य में इन तत्वों का अभाव है, इसीलिए इस पर विस्तृत समाजशास्त्रीय अध्ययन की आवश्यकता है।

उद्देश्य :

1. डिजिटल आधुनिकता के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव का प्रारम्भिक आकलन करना।
2. बजरडीहा के हथकरघा बुनकरों में डिजिटल तकनीक के उपयोग की स्थिति का अध्ययन करना।
3. डिजिटल तकनीक को अपनाने में आने वाली कठिनाइयों का पता लगाना।
4. मुख्य अध्ययन हेतु शोध उपकरणों की जांच करना।
5. विस्तृत शोध के लिए संभावित शोध प्रश्नों की पहचान करना।

कार्य प्रणाली:-

इस अध्ययन के लिए नमूना चयन उद्देश्य पूर्ण यादृच्छिक नमूनाकरण विधि द्वारा प्राप्त किया गया था। इस अध्ययन के लिए कुल 20 उत्तरदाताओं का चयन किया गया, जिनकी आयु 15 से 60 वर्ष के बीच थी। वाराणसी जिले के बजरडीहा क्षेत्र से पुरुष उत्तरदाताओं का चयन किया गया था। बुनकरों से जानकारी एकत्र करने के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था, जिनमें कुछ खुले तो कुछ बंद प्रश्नों को सम्मिलित किया गया था।

यह अध्ययन उत्तरदाताओं के प्रत्यक्ष साक्षात्कार द्वारा प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। आंकड़े एकत्र करने के बाद उन्हें सारणीबद्ध रूप में परिवर्तित किया गया। प्रश्नावली से प्राप्त उत्तरों को विभिन्न शोध प्रश्नों के अनुसार व्यवस्थित और सामूहिक कृत किया गया था।

डेटा विश्लेषण और व्याख्या:-

यह अनुभाग बजरडीहा वाराणसी के 20 हथकरघा बुनकरों द्वारा इकट्ठा किए गए डाटा का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसको अर्द्ध संरक्षित प्रश्नावली के माध्यम से पायलट अध्ययन के दौरान इकट्ठा किया गया था।

1. उत्तरदाताओं की सामाजिक जनसांख्यिकीय रूपरेखा
2. उत्तरदाताओं का आयु विवरण आयु (वर्ष) आवृत्ति प्रतिशत

डेटा विश्लेषण और व्याख्या (Data Analysis and Interpretation) :-

यह अनुभाग बजरडीहा, वाराणसी के 20 हथकरघा बुनकरों द्वारा इकट्ठा किए गए डाटा का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसको अर्द्ध संरक्षित प्रश्नावली के माध्यम से पायलट अध्ययन के दौरान इकट्ठा किया गया था।

1st उत्तरदाताओं की सामाजिक-जनसांख्यिकीय रूपरेखा

1.1 Age wise distribution of Respondents-

Age (Years)	Frequency	Percentage
18-29	7	35
30-39	3	15
40-49	4	20
50-60	6	30
Total :	20	100

विश्लेषण :-

तालिका 1.1 दर्शाता है कि 35% उत्तरदाता 18-29 वर्ष के बीच थे, जबकि 30% उत्तरदाता 50-60 वर्ष के थे, तथा 20% उत्तरदाता 40-50 वर्ष के थे, साथ ही 15% उत्तरदाता 30-39 वर्ष के भी थे, जो यह दर्शाता है कि हथकरघा कला को अब भी बुनकरों की छः पीढ़ियों द्वारा अपनाया जा रहा है, ताकि वो इस कला को आगे लेकर जा सके।

1.2 Marital Status (वैवाहिक स्थिति) –

Marital Status	Frequency	Percentage
विवाहित (M)	13	65
अविवाहित (UM)	7	35
Total :	20	100

तालिका यह दर्शाता है कि ज्यादातर बुनकर (65%) विवाहित हैं जिन पर परिवार की जिम्मेदारियाँ हैं, जो बुनकरों के फैसलों को प्रभावित करते होंगे कि इस कला को आगे ले जाना है या नहीं।

1.3 शैक्षिक स्थिति (Educational Status) –

Educational Status	Frequency	Percentage
Illiterate	7	35
Upto 10 th	12	60
Up to 12 th	1	5
ITI/Diploma	0	0
Grod	0	0
Total :	20	100

यह तालिका दर्शाता है कि ज्यादातर बुनकर सिर्फ दसवीं तक पढ़े हैं और कुछ तो अशिक्षित हैं, जिसके कारण उन्हें सरकारी योजना की न तो जानकारी मिल पाती होगी और न ही वो इसका लाभ उठा पाते होंगे।

1.4 पश्चिमावर का प्रकार (Type of Family) –

Type of Family	Frequency	Percentage
संयुक्त (J)	7	35
नाभिकीय (N)	13	65
Total :	20	100

तालिका से यह प्रतीत होता है कि ज्यादातर बुनकर अब Nuclear Family से हैं, जो एक कार्मिक बदलाव (Gradual Sheet) दिखा रहा है जिसमें ज्यादा परिवार की जिम्मेदारी उठाना बुनकरों के लिए संभव नहीं हो पा रहा है, क्योंकि यह कला धीरे-धीरे अवनति की ओर बढ़ रही है और बुनकर अन्य व्यवसायों को अपनाना शुरू कर रहे हैं।

2nd हथकरघा बुनकरों के मध्य डिजिटल आधुनिकता–

2.1 Smart Phone Ownership –

Response	Frequency	Percentage
Yes	20	100
No	0	0
Total :	20	100

यह तालिका दर्शाता है कि सभी बुनकरों के पास मोबाइल है, परन्तु वह इसका उपयोगी इस्तेमाल कर पाते हैं या नहीं, इसकी पुष्टि अब भी नहीं हुई है।

2.2 इंटरनेट का उपयोग(Internet Usage) –

Response	Frequency	Percentage
Yes	20	100
No	0	0
Total :	20	100

यह तालिका दर्शाता है कि बुनकर इंटरनेट का भी इस्तेमाल करते हैं।

2.3 ऑनलाइन भुगतान का उपयोग (Use of Online Payment) –

Response	Frequency	Percentage
Yes	6	30
No	14	70
Total :	20	100

यह तालिका दर्शाता है कि सिर्फ 30 प्रतिशत बुनकर ऑनलाइन भुगतान का इस्तेमाल करते हैं, बाकि 70 प्रतिशत अब भी नगद भुगतान पर निर्भर है, जो यह दिखाता है कि आर्थिक डिजिटलीकरण में अब भी संभावित अंतराल (Gap) मौजूद है जो इस कला के अवनति का एक मुख्य कारण हो सकता है।

2.4 सोशल मीडिया विपणन(Social Media Marketing) –

Response	Frequency	Percentage
Yes	6	30
No	14	70
Total :	20	100

यह तालिका दर्शाता है कि 70 प्रतिशत बुनकर अब भी इंटरनेट का सही इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं।

2.5 Awareness of Govt. Digital Scheme –

Response	Frequency	Percentage
Aware	7	35
Not Aware	13	65
Total :	20	100

यह तालिका दर्शाता है कि लगभग दो तिहाई (65 %) बुनकर ऐसे हैं जिन्हें सरकारी योजनाओं की कोई जानकारी नहीं है, जिसके कारण वो इसका लाभ नहीं उठा पा रहे हैं जो डिजिटल आधुनिकीकरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3rd चर्चा

पायलट अध्ययन से यह पता चला कि अधिकांश उत्तरदाताओं के पास फोन उपलब्ध है।

पुराने अध्ययनों से ज्ञात हुआ था कि भारत के पारंपरिक कारीगरों के मध्य फोन का उपयोग तेजी से बढ़ा है, परन्तु यह सिर्फ संचार और मनोरंजन तक ही सीमित है।

एंथोनी गिडेंस के आधुनिकता सिद्धांत के अनुसार आधुनिक तकनीक समाज में परिवर्तन लाती है लेकिन उसका प्रभाव सभी क्षेत्रों में एक समान नहीं होता, इसीलिए स्मार्टफोन का होना तो आधुनिकता का प्रतीक है, परन्तु यह आर्थिक परिवर्तन और उन्नति का सूचक नहीं है।

पायलट अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि बुनकर सोशल मीडिया, व्हाट्सएप और यूट्यूब का इस्तेमाल करते हैं लेकिन अपने व्यवसाय को बढ़ाने हेतु किसी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म को उपयोग अत्यधिक कम करते हैं।

पुराने अध्ययनों में भी यही पता चला कि बुनकर व्यवसाय के लिए इसका उपयोग कम करते हैं।

मैनुअल कास्टेल्स के नेटवर्क समिति सिद्धांत के अनुसार इंटरनेट के साथ-साथ आर्थिक नेटवर्क से जुड़ना भी आवश्यक है, ताकि व्यवसाय को आगे बढ़ाया जा सके।

पायलट अध्ययन से निष्कर्ष मिला कि अधिकांश बुनकर अभी भी नगद भुगतान को प्राथमिकता देते हैं।

पूर्व अध्ययनों में भी यह बात सामने आई कि छोटे कारीगरों में डिजिटल भुगतान को अपनाने की गति अत्यन्त धीमी है।

पियर बोर्दियू के सांस्कृतिक पूंजी सिद्धान्त के अनुसार ज्ञान और कौशल की कमी के कारण व्यक्ति उपलब्ध संसाधनों का पूरा लाभ नहीं ले पाता है।

अब भी अधिकांश बुनकर अपने उत्पादों की बिक्री के लिए गद्दीदारों पर निर्भर हैं। पूर्व अध्ययनों से भी यह बात साबित होती है कि बुनकरों की बाजार तक प्रत्यक्ष पहुंच नहीं है, जिसके कारण उनकी आय प्रभावित होती है।

मैनुअल कास्टेल्स के नेटवर्क समिति सिद्धान्त के अनुसार यदि कोई समुदाय डिजिटल आर्थिक नेटवर्क से नहीं जुड़ पाता, तो उसे तकनीक का पूरा लाभ नहीं मिलता।

कई उत्तरदाताओं को सरकारी योजनाओं की पूरी जानकारी नहीं मिल पाती है।

पूर्व शोधों में भी यह तथ्य सामने आया कि डिजिटल साक्षरता को पारंपरिक कारीगरों के लिए एक प्रमुख चुनौती बताया गया है।

पियर बोर्दियू के अनुसार डिजिटल ज्ञान भी एक प्रकार की सांस्कृतिक पूंजी है, और जिनके पास इसकी कमी होती है, वो अवसरों का भी सही लाभ नहीं उठा पाते।

4th समग्र चर्चा

पायलट अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बजरडीहा के हथकरघा बुनकरों के जीवन में डिजिटल आधुनिकता देखने को मिलती है, परन्तु उसका प्रभाव सिर्फ संचार और मनोरंजन तक ही सीमित है, व्यापार, विपणन, डिजिटल भुगतान आदि क्षेत्रों में इसका उपयोग अभी सीमित है, इसीलिए कहा जा सकता है कि डिजिटल आधुनिकता का स्वरूप अभी भी असमान है।

पायलट अध्ययन यह भी दर्शाता है कि डिजिटल तकनीक का प्रभावी उपयोग अब भी नहीं हो पा रहा है, इसलिए बुनकरों को डिजिटल साक्षरता, प्रशिक्षण दिलाना अति आवश्यक है।

5th निष्कर्ष

पायलट अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बजरडीहा के हथकरघा बुनकरों के बीच डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता और उनके प्रभावी उपयोग में स्पष्ट अंतर है। अध्ययन में शामिल सभी 20 उत्तरदाताओं के पास फोन है तथा सभी इंटरनेट का उपयोग करते हैं, इससे यह पता तो चलता है कि डिजिटल तकनीक तक पहुंच अब लगभग सार्वभौमिक हो चुकी है। हालांकि डिजिटल तकनीक का उपयोग मुख्यतया संचार और मनोरंजन तक ही सीमित है, केवल 30 प्रतिशत उत्तरदाता ऑन लाइन भुगतान करते हैं और 30 प्रतिशत सोशल मीडिया का उपयोग अपने उत्पादों के विपणन के लिए करते हैं, इससे स्पष्ट है कि डिजिटल तकनीक का उपयोग आर्थिक गतिविधियों और व्यवसाय के विस्तार के लिए अभी व्यापक रूप से नहीं हो रहा है, या फिर यह कहा जा सकता है कि अभी भी हथकरघा बुनकरों को इन डिजिटल तकनीक का इस्तेमाल अपने कार्य के लिए किस तरीके से प्रभावी रूप से करना है इसकी जानकारी उन्हें नहीं है या फिर इसमें उन्हें किसी प्रकार का कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। इसलिए वह इन डिजिटल तकनीक को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल नहीं कर पाते।

अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि 65 प्रतिशत उत्तरदाताओं को सरकारी डिजिटल योजनाओं की जानकारी नहीं है इससे यह संकेत मिलता है कि उनमें जानकारी का अभाव भी है।

शैक्षिक स्थिति भी डिजिटल आधुनिकता को प्रभावित करती है, अधिकांश उत्तरदाता केवल दसवीं तक शिक्षित है तथा उच्च शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं का अभाव यह दर्शाता है कि सीमित शैक्षिक स्तर डिजिटल कौशल और नई तकनीक को अपनाने में बाधा बन सकता है।

डिजिटल आधुनिकीकरण में सबसे बड़ी चुनौती प्रशिक्षण का अभाव माना जा रहा है क्योंकि अधिकांश उत्तरदाताओं ने माना है कि यदि उन्हें उचित डिजिटल प्रशिक्षण दिया जाए, मार्गदर्शन दिया जाए और तकनीकी सहायता मिले तो वह ऑनलाइन भुगतान, सोशल मार्केटिंग तथा अन्य डिजिटल सेवाओं का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकते हैं।

समग्र रूप से यह पायलट अध्ययन दर्शाता है कि हथकरघा बुनकरों के बीच डिजिटल पहुँच तो उपलब्ध है, लेकिन डिजिटल सशक्तिकरण अभी अधूरा है। डिजिटल आधुनिकता केवल फोन रखने तक सीमित नहीं है, इसका वास्तविक उद्देश्य डिजिटल तकनीक का उपयोग आर्थिक, सामाजिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए करना है, इसके लिए डिजिटल साक्षरता, प्रशिक्षण, सरकारी योजनाओं की जानकारी तथा डिजिटल विपणन कौशल को बढ़ावा देना अत्यन्त आवश्यक है, ताकि हथकरघा बुनकर अपने कला को आगे ले जा सके और इस कला को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा मिल सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Murty,V.(2020). E-commerce and the Indian Textile: Modernity and Tradition in a changing world (Major Research paper, University of Ottawa). University of Ottawa Research Repository.
2. Dwivedi,D.,Kesarwani,P.,& Singh,M.(2019).Study on problems of Handloom weavers of Varanasi District.International Journal of Applied Social Science,6(7),1798-1802.
3. Basole,A.(2014).The informal sector from a knowledge perspective.Yojana, October 2014,8-13.
4. feJ] म.क्र.(2014). Cukjl ds cqudjksa dh orZeku fLFkfr lkfgR; dat-
5. Meghna.(2021). Handloom weaving village,Banaras (Bachelor's thesis).SPA Bhopal Institutional Repository.
6. Zahir,M.A.(1966). Handloom industry of Varanasi (Doctoral Dissertation).
7. Shweta,(2016).A socio economic condition of Varanasi saree weavers:A case study of Lohta, Varanasi.Chitrolekha international Magazine on Art and Design.6(1).
8. Tiwari,D.(2015). Living conditions of weavers: A case study of Varanasi.Indian Journal of Research in Anthropology.
9. Kudri,S.K.G.(2025). Impact of weaving on Family environment:A Sociological Analysis.Lokratna,XIX.
10. Paul,S.,Biswas,R.,& Bhattacharya,R.(2024).The Handloom Weavers of Varanasi: A Study on their Opportunities and Challenges.International Journal of Creative Research Thoughts(IJCRT).